बिश्नोई आरती संग्रह • जम्भ भक्ति

गुरु जम्भेश्वर भगवान की आरती

बिश्नोई समाज में गाई जाने वाली जाम्भोजी की 10 आरतियाँ, साथ में ॐ जय जगदीश हरे। हर आरती का सरल अर्थ और कठिन शब्दों के अर्थ वेबसाइट पर हैं: **jambhbhakti.com/jambheshwar-bhagwan-ki-aarti/**

1. आरती हो जी समराथल देव
2. कु कु केरा चरण पधारो गुरु जम्भदेव
3. आरती कीजै गुरु जंभ जती की
4. आरती कीजै गुरु जंभ तुम्हारी
5. आरती कीजै श्री जंभ गुरु देवा
6. आरती जय जम्भेश्वर की
7. आरती श्री महाविष्णु देवा
8. आरती कीजै नरसिंह कंवर की
9. जय गुरुदेव दयानिधि
10. ओ३म् शब्द सोऽहं ध्यावे
11. ॐ जय जगदीश हरे (साथ में गाई जाने वाली आरती)

1 आरती हो जी समराथल देव

आरती हो जी समराथल देव, विष्णु हर की आरती जय।
थारी करे हो हांसल दे माय, थारी करे हो भक्त लिव लाय।
सुर तेतीसां सेवक जांके, इन्द्रादिक सब देव।
ज्योति स्वरूपी आप निरंजन, कोई एक जानत भेव ॥१॥
पूर्ण सिद्ध जम्भ गुरू स्वामी, अवतार केवलि एक।
अन्धकार नाशन के कारण, हुए हुए आप अलेख ॥२॥
समराथल हरी आन विराजे, तिमिर भयो सब दूर।
सांगा राणा और नरेशा, आये आये सकल हजूर ॥३॥
समराथल की अद्भुत शोभा, वरणी न जात अपार।
सन्त मण्डली निकट विराजे, निर्गुण शब्द उचार ॥४॥
वर्ष इक्यावन देव दया कर, कीन्हों पर उपकार।
ज्ञान ध्यान के शब्द सुनाये, तारण भव जल पार ॥५॥
पन्थ जाम्भाणों सत्य कर जाणों, यह खांडे की धार।
सत प्रीत सों करो कीर्तन, इच्छा फल दातार ॥६॥
आन पन्थ को चित से टारो, जम्भेश्वर उर ध्यान।
होम जाप शुद्ध भाव सों कीजो, पावो पद निर्वाण ॥७॥
भक्त उद्धारण काज संवारण, श्री जम्भगुरू निज नाम।
विघ्न निवारण शरण तुम्हारी, मंगल के सुख धाम ॥८॥
लोहट नन्दन दुष्ट निकन्दन, श्री जम्भगुरू अवतार।
ब्रह्मानन्द शरण सतगुरू की, आवागवन निवार ॥९॥
आरती हो जी समराथल देव, विष्णु हर की आरती जय ॥

अर्थ सहित: jambhbhakti.com/aarti-hoji-samrathal-dev/

2 कु कु केरा चरण पधारो गुरु जम्भदेव

कु कु केरा चरण पधारो गुरू जम्भदेव,
साधु जो भक्त थारी आरती करे।
महात्मा पुरुष थारो ध्यान धरे।
जम्भ गुरू ध्यावे सो सर्व सिद्धि पावे।
क्रोड़ जन्म किया पाप झरे।
हृदय जो हवेली मांही रहो प्रभु रात दिन।
मोतियन की प्रभु माला जो गले।
कर में कमंडल शीश पर टोपी नयना माने दोय,
मसाल सी जरे।
कूं कूं केरा...
सोने रो सिंहासन प्रभु रेशम केरी गादियां,
फूला हांदी सेज प्रभु बैंसया ही सरे।
प्रेम रा पियाला थाने पावे थारा साधु जन,
मुकुट छत्र सिर चंवर ढुले।
कूं कूं केरा...
शंख जो शहनाई बाजे झींझा करे झनझन
भेरी जो नगारा बाजे नोपता धुरे।
कंचन केरो थाल कपूर केरी बातियां
अगर केरो धूप रवि इन्द्र जो झुऐ
कूं कूं केरा...
मजीरा टिकोरा झालर घंटा करे धननन
शब्द सुण्यासु सारा पातक जरै।
शेष जो सेवक थारे, शिव से भंडारी,
ब्रह्मा से खजांची सो जगत धरे।
कूं कूं केरा...
आरती में आवे आयं शीश जो नवावे, निश जागरण सुण्यां
यमराज जो डरे।
साहबराम सुनावे गावे नाव निधि पावे।
सीधो मुक्ति सिधावे काल कर्म जो टोरे।
कूं कूं केरा...

अर्थ सहित: jambhbhakti.com/aarti-ku-ku-kera-charan/

3 आरती कीजै गुरु जंभ जती की

आरती कीजै गुरू जंभ जती की,
भगत उधारण प्राण पति की।
पहली आरती लोहट घर आये,
बिना बादल प्रभू इमिया झूरायै ॥1॥
दूसरी आरती पीपासर आये,
दूदाजी ने प्रभू परचौ दिखायै ॥2॥
तीसरी आरती समराथल आये,
पुलाजी ने प्रभु सुरग दिखायै ॥3॥
चौथी आरती अनवी निवायै,
भूत लोक प्रभुपाद कहवायै ॥4॥
पांचवी आरती ऊधोजन गावै,
वास बैकुंठ अमर पद पावै ॥5॥

अर्थ सहित: jambhbhakti.com/aarti-kijai-guru-jambh-jati-ki/

4 आरती कीजै गुरु जंभ तुम्हारी

आरती कीजै गुरू जंभ तुम्हारी,
चरणो की शरण मोहि राख मुरारी।
पहली आरती उन मुन कीजे,
मन बच करम चरण चित्त दीजै ॥1॥
दूसरी आरती अनहद बाजा,
सरवण सुना प्रभु शब्द राजा ॥2॥
तीसरी आरती कंठसुर गावै,
नवधा भक्ति प्रभू प्रेम रस पावै ॥3॥
चौथी आरती हिरदे में पूजा,
आतम देव प्रभू और नहीं दूजा ॥4॥
पांचवी आरती प्रेम प्रकाश,
कहत उधो साधो चरण निवासा ॥5॥

अर्थ सहित: jambhbhakti.com/aarti-kijai-guru-jambh-jati-ki/

5 आरती कीजै श्री जंभ गुरु देवा

आरती कीजै श्री जंभ गुरू देवा,
पार न पावे बाबो अलख अभेवा।
पहली आरती परम गुरू आये,
तेज पुंज काया दरसायै ॥1॥
दूसरी आरती देव विराजे,
अनंत कला सतगुरु छवि छाजै ॥2॥
तीसरी आरती त्रिसूल ढापे,
क्षुधा तिसना निंदरा नहीं व्यापे ॥3॥
चौथी आरती चहूं दिस परसे,
पेट पूठ नहीं सनमुख दरसे ॥4॥
पांचवी आरती केवल भगवंता,
शब्द सुणा जोजन परियंता ॥5॥
उदो दास आरती गावै,
जंभ गुरूजी को पार न पावै ॥6॥

अर्थ सहित: jambhbhakti.com/aarti-kijai-guru-jambh-jati-ki/

6 आरती जय जम्भेश्वर की

आरती जय जम्भेश्वर की,
परम सत् गुरू परमेश्वर की।
गुरुजी जब पीपासर आये,
सकल संतो के मन भाये।
देवता सिद्ध मुनि दिगपाल,
गगन में खूब बजावे ताल।
हुआ उछाह, लोहट नरनाह, मगन मन माह।
देख छवि निज सुत सुन्दर की। आरती जय...
परम सुख हंसा मन माहीं,
प्रभु को गोदी बैठाई।
नगर की मिली सभी नारी,
गीत गावे दे दे ताली।
अलापे राग, बड़े हैं भाग, पुण्य गये जाग।
धन्य है लीला नटवर की। आरती जय...
चराने गऊओ को जावे,
चरित्र ग्वालों को दिखलावे।
करे सैनी से सब काजा,
कहावे सिद्ध श्री जम्भ राजा।
रहे योगेश, भक्त के ईस, गुरू जगदीश।
पार नहीं महिमा प्रभूवर की। आरती जय...
गुरूजी फिर समराथल आये,
पंथ श्री बिश्नोई चलवाये।
होम, जप, तप, क्रिया सारे,
देख सुर नर मुनी सब हारे।
किया प्रचार वेद का सार जगत आधार।
सम्मति जिसमें विधि हर की। आरती जय...
गुरुजी अब सेवक की सुणियौं,
नहीं अवगुण चित में धरियों।
शरण निज चरणों की रखियों,
पार नैया भव से करियो।
यही है आस, राखियो पास, कीजियों दास।
कहूं नित जय जय गुरुवर की,

परम सतगुरू परमेश्वर की।
आरती जय जम्भेश्वर की, परम सतगुरु परमेश्वर की।

अर्थ सहित: jambhbhakti.com/aarti-shri-mahavishnu-deva/

7 आरती श्री महाविष्णु देवा

आरती श्री महाविष्णु देवा,
सुर नर मुनि जन करे सब सेवा ॥
पहली आरती शेष पर लौटे,
श्री महा लिछमी चरण पलोटे ॥1॥
दूसरी आरती खीर समंदर ध्यायै,
नाभि कमल बिरमा उपजायै ॥2॥
तीसरी आरती विराट अखंडा,
जाके रौम कोटि बिरमंडा ॥3॥
चौथी आरती वैकुंठ विलाशी,
काल अंगुठ सदा अविनाशी ॥4॥
पांचवी आरती घट घट वासा,
हरि गुण गावे उधो दासा ॥5॥

अर्थ सहित: jambhbhakti.com/aarti-shri-mahavishnu-deva/

8 आरती कीजै नरसिंह कंवर की

आरती कीजै नरसिंह कंवर की,
वेद विमल यश गावै मेरे स्वामी जी की।
पहली आरती प्रहलाद उबारे,
हिरणाकुश नख से उदर विदारे।
दूसरी आरती बावन सेवा,
बलि के द्वारे पधारे हरि देवा।
तीसरी आरती बैकुण्ठ पधारे,
सहस्त्रबाहुजी के कारज सारे।
चौथी आरती असुर संहारे,
भक्त विभीषण लंक बैठाये।
पांचवी आरती कंस पछाड़े,
गोपियां के ग्वाल सदा प्रतिपाले।
तुलसी के पात घट घट हीरा,
हरि के चरण जस गावे रणधीरा।

अर्थ सहित: jambhbhakti.com/aarti-shri-mahavishnu-deva/

9 जय गुरुदेव दयानिधि

जय गुरुदेव दयानिधि, दीनन हितकारी।
जय जय मोह विनाशक, भव बंधन हारी। ओम जय...
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव, गुरू मूरति धारी।
वेद पुराण बखानत, गुरु महिमा भारी ॥ ओम जय... ॥1॥
जप तप तीर्थ संयम, दान विविध दीन्हें।
गुरू बिन ज्ञान न होवे, कोटि यत्न कीन्हें ॥ ओम जय... ॥2॥
माया मोह नदी जल जीव बहे सारे।
नाम जहाज बिठा कर, गुरू पल में तारे ॥ ओम जय... ॥3॥
काम क्रोध मद मत्सर, चोर बड़े भारे।
ज्ञान खड़्ग ले कर में, गुरु सब संहारे ॥ ओम जय... ॥4॥
नाना पंथ जगत में, निज निज गुण गावे।
सब का सार बताकर, गुरू मारग लावे ॥ ओम जय... ॥5॥
गुरू चरणामृत निर्मल, सब पातक टारी।
वचन सुनत तम नाशे, सब संशय हारी ॥ ओम जय... ॥6॥
तन मन धन सब अर्पण, गुरु चरणन कीजे।
ब्रह्मानंद परम पद, मोक्ष गती दीजे ॥ ओम जय... ॥7॥

अर्थ सहित: jambhbhakti.com/jambheshwar-bhagwan-aarti-jai-gurudev-dayanidhi/

10 ओ३म् शब्द सोऽहं ध्यावे

ॐ शब्द सोऽहं ध्यावे, स्वामी शब्द सोऽहं ध्यावे।
धूप दीप ले आरती, निज हरि गुण गावे।
मंदिर मुकुट त्रिशूल ध्वजा, धर्मों की फहरावे।
झालर शंख टिकोरा, नौपत घुररावे।
तीर्थ तालवे गुरु की समाधि, परसे सुरग जावे।
अड़सठ तीरथ को फल, समराथल पावे।
मंझ फागण शिवरात, जातरी रलमिल सब आवे।
झिगमिग जोत समराथल, शिम्भू के मन भावे।
धर्मी करे आनंद भवन पर, पापी थररावे।
राजव शरण गुरु की, क्यूं मन भटकावे।

अर्थ सहित: jambhbhakti.com/bhajan-jambheshwar-aarti-om-shabd-sohan-dhyave/

11 ॐ जय जगदीश हरे (साथ में गाई जाने वाली आरती)

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, छिन में दूर करे ॥ ॐ ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुख बिनसे मन का ॥ प्रभु ॥
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ ॐ ॥
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किसकी ॥ प्रभु ॥
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी ॥ ॐ ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अंतर्यामी ॥ प्रभु ॥
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ॥ ॐ ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ॥ प्रभु ॥

मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता ॥ ॐ ॥
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राणपति ॥ प्रभु ॥
किस विध मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ ॐ ॥
दीन बन्धु दुःख हर्ता, तुम ठाकुर मेरे ॥ प्रभु ॥
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ ॥

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥ प्रभु ॥
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ॥ ॐ ॥

अर्थ सहित: jambhbhakti.com/jambheshwar-bhagwan-aarti-jai-gurudev-dayanidhi/

आरती कैसे करें

1. सुबह हवन के बाद या शाम को घी की जोत जलाकर, थाली में दीपक और धूप लेकर आरती करें।
2. एक व्यक्ति पद गाए और सब मिलकर टेक दोहराएँ।
3. अमावस्या, जाम्भोजी अवतार दिवस, पंथ स्थापना दिवस, निर्वाण दिवस, जागरण और मुकाम-समराथल के मेलों में आरती खास तौर पर गाई जाती है।
4. आरती पूरी होने पर जयकारा लगाएँ।

बोलिए श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान की जय